राष्ट्र की आवाज

आर्यावर्त क्रांति

वर्ष 6 : अंक 50 लखनऊ, शनिवार 11 अगस्त, 2019, मूल्य 1 रुपए

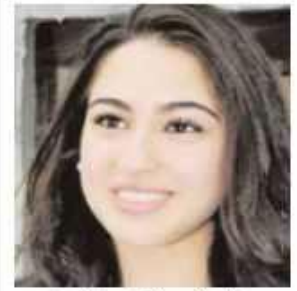

'कूली नं-1' रीमेक की शूटिंग बैंकॉक में शुरू -पेज : 8

जल संकट एक गंभीर चुनौती, जागरूकता जरूरी वरना बढ़ेगी मुश्किल

आर्यावर्त क्रांति संवाददाता

लखनऊ। लगातार दो वर्षों के कमजोर मानसून के बाद, 330 मिलियन लोग–देश की एक चौथाई आबादी – एक गंभीर सूखे से प्रभावित हैं। लगभग 50 प्रतिशत भारत सूखे जैसी स्थिति के साथ जूझ रहा है, विशेष रूप से पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों व उत्तर–प्रदेश, इस साल औसत से कम बारिश होने के कारण गंभीर स्थिति मे है । नीती आयोग रिपोर्ट 2018 के अनुसार, 21 प्रमुख शहरों (दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद और अन्य) 2020 तक शून्य भूजल स्तर तक पहुंचने की दौड़ मे हैं, जिससे 100 मिलियन लोग भूजल की पहुंच से प्रभावित होंगे

समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआई) रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक, देश की पानी की मांग – उपलब्ध आपूर्ति से दोगुना होने का अनुमान है, जिससे लाखों लोगों के लिए गंभीर पानी की कमी हो सकती है और देश के सकल घरेलू उत्पाद में छह प्रतिशत का नुकसान हो सकता है। आज की तारीख में, भारत की 12% आबादी पहले से ही 'डे ज़ीरो' से गुजर रही है, जो सालो से अत्यधिक भूजल पंपिंग, एक अकुशल और बेकार जल प्रबंधन प्रणाली और वर्षा की कमी के कारण पैदा हुई है । इसके अलावा, रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2020 तक 21 भारतीय शहर भूजल से बाहर निकल जाएंगे (जोकि अधिकांश भारतीय शहरों में पानी का मुख्य स्त्रोत है), लगभग 40% आबादी के पास 2030 तक पीने के पानी की कोई सुविधा नहीं होगी और पानी के संकट के कारण भारत की 6% जीडीपी 2050 तक समाप्त हो जाएगी। इस रिपोर्ट के जारी होने के ठीक एक साल बाद, भारत सरकार ने 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पीने के साफ पानी पाइप द्वारा उपलब्ध कराने के एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की है। हालांकि इस लक्ष्य से, यह स्पष्ट नहीं है कि सरकार वर्तमान परिस्थितियों के तहत, इस दुर्जेय लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना चाहती है।

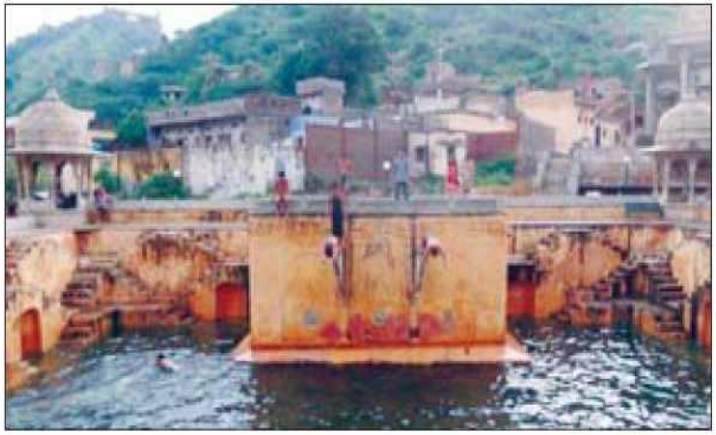

डॉ भरत राज सिंह
महानिदेशक (तकनीकी)
एसएमएस, लखनऊ

भारत की पानी की समस्याओं का समाधान– यह समझना महत्वपूर्ण है कि वर्तमान जल संकट की जड़ें, मानसून की कमी या देरी से नहीं हैं, जैसाकि भारतीय मीडिया द्वारा बनाई जा रही । वास्तव में, यह सरकार की उपेक्षा, गलत प्रोत्साहन और देश के जल संसाधनों का एकमुश्त दुरुपयोग है, जिसने वर्तमान संकट को जन्म दिया है। इसके अलावा, यह भी जानना जरूरी है कि आने वाले दशकों में जलवायु परिवर्तन भारत की वर्तमान जल की कमी को अधिक बढावा देगी। इसका मुख्य कारण वैश्विक तापमान में बढोत्तरी (ग्लोबलझवार्मिंग), जिसमे भारतवर्ष भी विश्व मे पृथ्वी के अंधाधुंध दोहन, वाहनो व तापीय विद्युत गृहो से उत्सर्जित ग्रीन–हाउस गैसो, औद्योगीकरणो आदि से तीसरे स्थान पर है । जिससे जलवायु परिवर्तन विनष्ट करने मे एक सहयोगी के रूप मे उभर कर आया है । आज पूरे विश्व मे जलवायु परिवर्तन की विभीषिका ने अल–नीनो से भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र से आने वाली मानसूनी हवा के पैटर्न मे उलटफेर कर दिया है और इसके दुष्प्रभाव से हमारे देश को भी पिछले कुछ दशको से असामान्य रूप से गरमी का प्रभाव, वर्षाऋतु मे परिवर्तन, समुद्र के किनारे के क्षेत्रो मे बेमौसम भारी बारिश, मैदानी क्षेत्रो मे सूखा और जल–वृष्टि मे कमी का दुष्प्रभाव बढता जा रहा है, जो जल संकट का एक मुख्य कारण है।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, पूर्व–औद्योगिक स्तरों के ऊपर 2त सेंटीग्रेड की वैश्विक औसत वार्मिंग, पानी की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर अप्रत्याशित रूप से बढ़ेगी और भारत के खाद्य सुरक्षा पर भी गंभीर प्रभाव पड़ेगा। भारत की वार्षिक कृषि जल निकासी दुनिया में सबसे अधिक चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद है। इसके अलावा, चीन, जिसका सिंचाई के लिए 69 मिलियन हेक्टेयर, जो भारत के 67 मिलियन हेक्टेयर की तुलना में एक बड़ा क्षेत्र है, कृषि प्रयोजनों के लिए बहुत कम पानी निकालता है। इससे यह स्पष्ट है कि भारत का जल–प्रबंधन, अक्षम्य और वास्तव मे अक्षरणीय है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अब्दुल कलाम तकनीकी विश्व–विद्यालय के 19वें स्थापना दिवस (26 जुलाई 2019) को विश्व–विद्यालय के शोधकर्ताओ व छात्रो से आवाहन किया कि जल संचयन व संरक्षण, कचरा अपशिष्ट को सदूपयोगी बनाने पर आवश्यक नवाचार व इंक्युबेसन के माध्यम स्टार्ट–अप तैयार करे, क्योंकि स्वच्छ जल जल्द से जल्द दुर्लभ वस्तुओं में से एक बन जायेगा। इसी क्रम मे, शहरी क्षेत्रो मे हरियाली के साथ–साथ हर कॉलोनी में तालाबों / जल संचयन का मैंने एक प्रोजेक्ट तैयार किया है जिससे शहर की कालोनियो मे स्थित पार्कों मे भूमिगत जल संचयन हेतु तालाब भी बनाया जाना चाहिए, जिनके छत को कांक्रीट के पिलर पर छत डालकर, ऊपरी सतह पर मिट्टी की भराई होनी चाहिये, जिससे वह पार्क घास व फूल–पौधो से भी हरा–भरा रह सकता है। कॉलोनी की सड़कों के किनारे की नालियो को उक्त पार्क के जल सग्रहीत तालाब तक पहुचाया जाना चाहिए और उसके ओवरफ्लो को बडे नालो से जोड़ा जाना चाहिए। आज आम जनता को पानी के भंडारण, पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग के महत्व के बारे में शिक्षित किया जाना आवश्यक है। इससे सरकार की महत्वाकांक्षी योजना कि 2024 तक सभी ग्रामीण क्षेत्रो के घरों में पाइप से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जायेगा, में भी मदद मिलेगी।